3. वैद और दत्त जातियों में सगोत्र विवाह

ऊपर हमने बताया है कि सब मोहयाल जातियां ऋषियों की सन्तानें हैं और प्राचीन काल में सब ब्राह्मण वंश, अपने गोत्र और वेद-शाखा द्वारा, अपनी अपनी अलग पहचान बनाये रखते थे. इसी पहचान से सगोत्र (एक ही गोत्र में) विवाह नहीं होते थे. भारत में इस्लाम आने के पश्चात ब्राह्मणों/हिंदुओं ने अपनी सांस्कृतिक रक्षा के लिए अपनी सामाजिक परम्पराओं में कुछ फेर बदल किये. अब एक विशेष गोत्र और शाखा वाले कुल ने अपनी पहचान और भी स्पष्ट, तथा सर्व-विदित, करने के लिए अपने कुल को एक विशेष संज्ञा दे दी और उसको अपने नाम के साथ जोड़ दिया, जिसको अब जाति या caste कहते हैं. उस कुल का हर एक वंशज अपना नाम बताते समय अपने कुल की पहचान भी साथ ही बताने लगा. उदाहरणार्थ, पुराने भृगु वंश और यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा का "चंद्र प्रकाश" नाम का व्यक्ति अब "चन्द्र प्रकाश छिब्बर" हो गया. कालान्तर में पहचान के लिए जाति का महत्व बढ़ता गया और अब सब उसे "सी. पी. छिब्बर" से ही अधिक जानते हैं : उसकी मुख्य पहचान "छिब्बर" है और "चन्द्र प्रकाश" गौण है.

इस धार्मिक पद्धिति को सुरक्षित रखते हुए, उस समय एक और सुधार हुआ. मनु स्मृति के अनुसार हिन्दू अपने वर्ण के अंदर, परन्तु अपने गोत्र के बाहर, विवाह करते थे. अब एक ही वर्ण की कुछ, जानी पहचानी, जातियों ने मिलकर अपनी बिरादरियां (या जाति-समूह) बना लिये और निश्चय किया कि वह विवाह अपनी बिरादरी के अंदर ही करेंगे. हर बिरादरी में प्रायः एक गोत्र की एक ही जाति थी.

1026 में पंजाब में मोहयाल शासन समाप्त हो गया परन्तु शेष हिन्दू राजे इन कबीलों को राजवंशी मानते थे. बक्शी रतन चन्द वैद द्वारा लिखित "इस्लाहे मोहयाली, 1908" (पृ. १८) के अनुसार जब कन्नौज के राजा जयचंद ने राजसूय यज्ञ किया तो इस राजवंश से जुड़े कबीलों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया. वहां पर इनको "राय" की उपाधी दी गयी. वहां पर ही इन्होंने अपनी सात जातियों को बाली, भीमवाल, छिब्बर, दत्त, लौ, मोहन, वैद नाम दिए और इन सात जातियों की "मूहियाल बिरादरी" का गठन किया. यह जानकारी मान्य लगती है क्योंकि उस समय सारा हिन्दू समाज इसी प्रकार जातियों और बिरादरियों में बंट रहा था. [उर्दू में लिखने से 'मूहियाल' का उच्चारण 'मोहयाल' हो गया.]

हर नियम का प्रायः एक अपवाद भी होता है. जब सात जातियों की मूहियाल बिरादरी बनी तो उसमें सम्मिलित 'दत्त' और 'वैद' इन दो जातियों का गोत्र 'भरद्वाज' था. कहा जाता है कि उस समय यह असंगति सामने लाई गयी थी परन्तु, जो भी कारण रहे हों, इन दोनों जातियों के आपसी विवाह की प्रथा को रोका नहीं गया. 1908 की मोहयाल कान्फ्रेंस में यह समस्या फिर नेतागणों के सामने रखी गयी और बहुत विचार विमर्श हुआ पर यथा स्थिति बनी रहने दी गयी. सम्भवतः मोहयाल बिरादरी की थोड़ी संख्या के कारण रिश्ते नाते की कठिनाई भी ध्यान में रही होगी.

यह प्रथा आरम्भ कैसे हुई होगी, इसका केवल अनुमान लगाया जा सकता है. दीर्घ काल तक भारत में बौद्ध धर्म का प्रभुत्व रहा. उससे वैदिक धर्म की मान्यतायें शिथिल पड़ गयी थीं. सम्भवतः उस काल में इन दो सगोत्र कबीलों में आपसी विवाह होने लगे हों. एक और अनुमान भी है. काबुल के दत्त और पंजाब के वैद शासकों में बहुत ही घनिष्ट राजनीतिक सम्बन्ध थे और उनमें आपसी रिश्ते भी रहे हों. इस उदाहरण से इस सगोत्र विवाह की प्रथा को स्वीकृति या पुष्टी मिली हो.

प्राचीन काल में जो कुछ भी हुआ, दो तथ्य अब निर्विवाद हैं. सभी मोहयाल इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि दत्त और वैद जातियों का गोत्र भरद्वाज है. देखिये : रायज़ादा हरिचन्द वैद (गुलशन मोहयाली, भाग 2, पृ. 52 और 172); चौधरी चूनीलाल दत्त, (पृ. 95 और 176); पी. एन. बाली (पृ. 102 और 128); डाo लज्जा देवी मोहन (हमारे पूर्वज प्रमुख ऋषि, पृ 90). इस विषय पर कोई भ्रम नहीं है.

पी. एन. बाली यह भी लिखते हैं (पृ. 128) : “Notwithstanding the controversy in the past over Bhardwaj being the common gotra, marriages between the two castes are not considered profane and are consumed freely. … The confusion on the above point has been completely set at rest, with the acceptance of Dhanwantri as the gotra of Vaids by all concerned.” वैदों द्वारा धन्वन्तरी को गोत्र ऋषि मान लिए जाने से एक प्रकार से समस्या का समाधान हो गया है.

दूसरा : इस स्थिति को अब परिवर्तित नहीं किया जा सकता और न ही यह समस्या किसी प्रकार से विकट है. दीर्घ काल से चली आ रही इस कुप्रथा को मोहयाल समाज से मान्यता प्राप्त है. जो वैद भाई/बहन धन्वन्तरी को गोत्र मानकर दत्त परिवार से रिश्ता करना चाहते हैं वह भी स्वतंत्र हैं और बिरादरी की ओर से कोई आपत्ति नहीं. जिनको सगोत्री विवाह धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध लगते हैं वह इस से दूर रहें – उनके लिए कोई मजबूरी नहीं.

इस पृष्ठभूमि की जानकारी न होने के कारण यह प्रश्न सामने आता रहता है. जनरल मोहयाल सभा इस विषय में अब कुछ नहीं कर सकती. स्थानीय सभाएं गोष्टी द्वारा सब को जानकारी देती रहें.